प्रातः क्लास 26-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह तो बच्चे जानते हैं कि आत्मा अविनाशी है। बाप भी अविनाशी है तो प्यार किसको करना चाहिए? अविनाशी आत्मा को अविनाशी चीज़ को ही प्यार करना चाहिए। विनाशी (शरीर) को तो थोड़ेई प्यार करना चाहिए। सारी दुनिया ही विनाशी है। हरेक चीज़ विनाशी है। शरीर भी विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। आत्मा का प्यार अविनाशी हो जावेगा। आत्मा कब मरती नहीं है। इसको कहा जाता है राईटियस। राईटियस और अनराईटियस। बाप कहते हैं तुम अनराईटियस बन गये हो। वास्तव में अविनाशी का अविनाशी साथ ही प्यार होना चाहिए। तुम्हारा प्यार विनाशी शरीर के साथ हो गया है इसलिए रोना पड़ता है। अविनाशी के साथ प्यार नहीं। विनाशी के साथ प्यार होने से रोना पड़ता है। अभी तुम अपने को अविनाशी आत्मा समझते तो रोने की दरकार नहीं। वह अनराईटियस प्यार है इसलिए रोना पड़ता है। बाप पूछते हैं सतयुग में रोते हैं? क्यों? क्योंकि आत्म-अभिमानी हैं। यहां तो देह-अभिमानी हैं। तो अभी बाप तुम बच्चों को आत्माभिमानी बनाते हैं। देह-अभिमानी होने से रोना पड़ता है। विनाशी शरीर के पिछाड़ी रोते हैं। समझते भी हैं आत्मा मरती नहीं है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो तो रोने की दरकार नहीं। तुम अविनाशी बाप के बच्चे अविनाशी आत्मा हो। तुमको रोने की दरकार नहीं। आत्मा एक शरीर छोड़कर जाकर दूसरा पार्ट बजाती है। सो खेल करने दो। तुम शरीर में ममत्व क्यों रखते हो। देह सहित देह के सम्बन्ध से बुद्धि का योग तोड़ो। अपने को भी आत्मा अविनाशी समझो। आत्मा तो कब मरती नहीं है। गायन है भी है जो रोते हैं सो खाते हैं। आत्माभिमानी बनने से हंसने लायक बन जाते हो तो बाप देह-अभिमानी से आत्माभिमानी बनाते हैं। कहते हैं तुम कितने भूले हुये हो। जन्म-जन्मान्तर तुमको रोना पड़ा है। अभी फिर तुमको आत्माभिमानी होने की शिक्षा मिलती है। फिर कब तुम रोयेंगे नहीं। यह है रोने वालों की दुनिया। वह है हंसने वालों की दुनिया। यह है दुःख की दुनिया वह है सुख की दुनिया। बाप बहुत अच्छी तरह से शिक्षा बैठ देते हैं। अविनाशी बाप के अविनाशी बच्चों को शिक्षा मिलती है। वह देहाभिमानी है तो देह को ही देख शिक्षा देते हैं। तो देह की ही याद आने से रोते हैं। देखते भी हैं शरीर खत्म हो गया फिर उनको याद करने रोने से क्या फायदा। मिट्टी को कब याद किया जाता है क्या? अविनाशी चीज ने जाकर दूसरा जन्म लिया। यह तो बच्चे जानते हैं जो अच्छा कर्म करते हैं तो वह गाया जाता है। इनको फिर शरीर भी अच्छा मिलता है। कोई को खराब रोगी शरीर मिलता है वह भी कर्मानुसार है। ऐसे नहीं कि अच्छा कर्म किया है तो ऊपर चले जावेंगे। नहीं। ऊपर तो कोई भी नहीं जा सकते। अच्छा कर्म किया है तो अच्छा कहलायेगा। अच्छा जन्म मिलेगा। फिर भी नीचे तो उतरना ही है ना। तुम जानते हो हम चढ़ते कैसे हैं उतरते कैसे हैं। भल अच्छे कर्मानुसार अच्छा जन्म मिलेगा फिर भी नीचे उतरते कला कम होती जावेगी। भल कोई अच्छा महात्मा बनेगा फिर भी कला कम होती जावेगी। बाप कहते हैं फिर भी ईश्वर को याद कर अच्छा काम करते हैं तो मैं उनको अल्प काल क्षणभंगुर सुख देता हूं। सीढ़ी तो जरूर उतरनी ही है। नाम कर के बाला होगा। यहां के मनुष्य तो अच्छे-बुरे काम को भी नहीं जानते हैं। रिधी-सिधी वाले को कितना मान देते हैं। इन्हों के पिछाड़ी मनुष्य जैसे कि पागल हो जाते हैं। है तो सारा अज्ञान समझो कोई इनडायरेक्ट दान-पुण्य आदि करते हैं, धर्मशाला हास्पीटल आदि बनाते हैं तो दूसरे जन्म में उनको सजा जरूर मिलता है। बाकी बाप को याद नहीं रूह करते हैं। भल गालियां भी देते हैं परन्तु फिर भी मुख से भगवान तो कहते हैं ना। अनजान होने कारण जानते कुछ भी नहीं। भगवान को याद कर रूद्र पूजा करते हैं। रूद्र को भगवान समझते हैं। उनके लिए कहते हैं आकर यज्ञ रचते हैं। शिव रूद्र की पूजा करते हैं। बाप कहते हैं मेरी पूजा करते हैं परन्तु बेसमझी से। क्या2 बनाते हैं। क्या2 करते हैं। सो तो अभी तुम ही जानते हो। जितना मनुष्य है फिर उतना ही उन्हों के गुरु हैं। झाड़ में नये2 पत्ते टार-टारियां निकलती है तो कितनी शोभती है। पहले वाले पत्ते जैसे पुराने दिखाई पड़ते हैं। नये सतोगुणी होने कारण उनकी महिमा भी होती है। बाप कहते हैं यह दुनिया

26/8/68

है ही विनाशी चीज़। विनाशी ही इसको प्यार करेंगे। कोई कोई कोई का बहुत प्यार होता है तो मोह में पागल हो जाते हैं। बड़े2 सेठ मोह बस पागल हो जाते हैं। माताओं को ज्ञान न होने कारण विनाशी शरीर के पीछे विधवा बन पड़ती हैं। कितना रोती याद करती रहती हैं। अभी तुम अपने को आत्मा रहते हो। दूसरे को भी आत्मा देखते हो तो जरा भी दुःख नहीं होता है। वहां जरा भी दुःख नहीं होगा। अथाह सम्पत्ति रहती है। पढ़ाई को सोर्स आफ इनकम कहा जाता है ना। पढ़ाई में एम0 होती है। परन्तु वह है एक जन्म के लिए। गवर्मेन्ट से वेतन मिलता है। पढ़कर धंधा आद करते हैं तो भी पैसे आदि मिलते हैं। यहां तो फिर बात ही नई है। तो अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली कैसे भरते हो। आत्मा समझती है कि बाबा हमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना देते हैं। भगवान पढ़ाते हैं तो जरूर भगवान ही बनना है। परन्तु इनको (ल0ना0) भगवान भगवती समझना रांग है। राम सीता की डिनायस्टी फेल हुई है यह कोई नहीं जानते हैं। फेल होने की यह निशानी है। तुम क्षत्री बच्चे तो हो ना। माया रावण पर जीत पाते हो। मनुष्य रावण का अर्थ भी कुछ नहीं समझते हैं। यह भी ड्रामा है। अब समझते हैं वाह जब हम देहाभिमान में होते हैं तो हमारी बुधि कितनी डिग्रेड हो जाती है। जैसे जनावर बुधि बन गये हैं। जानवरों की भी आजकल अच्छी सेवा होती है। मनुष्यों कर तो कुछ भी नहीं। रेस के घोड़ों आदि की कितनी सम्भाल होती है। इन्हों के बराबरी में मनुष्यों की देखो क्या हाल है। कुत्तों को कितने प्यार से सम्भालते हैं। चुमते चाटते रहते हैं। साथ में सुलाते हैं। देखो दुनिया का क्या हाल है। वहां सतयुग में यह धंधा आदि नहीं होता। तो बाप कहते हैं बच्चे तुमको माया रावण ने अनराईटियास बना दिया है। अनराईटियस राज्य है ना। मनुष्य भी अनराईटियस तो सारी दुनिया भी अनराईटियस हो जाती है। अनराईटियस और राईटियस दुनिया में फर्क कितना है। कलियुग ही हालत देखो क्या है। मैं तुम्हें स्वर्ग स्थापन कर रहा हूं। तो माया भी अपना स्वर्ग दिखलाती है। टेम्पटेशन देती है। ऐ= आटोमेटकली धन कितना है। समझते हैं हम तो यहां स्वर्ग में बैठे हैं। स्वर्ग में थोड़े ही 50-100 मंजिल होते हैं। वहां तो डबल स्टोरी के मकान नहीं होते। मनुष्य ही थोड़े रहते हैं। इतनी जमीन तुम क्या करोगे। यहां जमीन के पिछाड़ी भी कितना लड़ते-झगड़ते हैं। वहां तो तुम्हारी जमीन ही सारी है। इतना रात-दिन का फर्क है। वह है लौकिक बाप यह है पारलौकिक बाप। पारलौकिक बाप बच्चों को क्या नहीं देते हैं। आधा कल्प तो तुम भक्ति करते ओथ हो। बाप साफ कहते हैं इन से मुक्ति नहीं मिलती। अर्थात मेरे से नहीं मिलते। तुम मेरे से मिलते हो ना। मैं भी मुक्तिधाम में रहता हूं, तुम भी मुक्तिधाम में रहते हो। फिर वहां से तुम स्वर्ग में जाते हो। वहां मैं नहीं होता हूं। भगवान से मिलने लिए मनुष्य कितना करते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। फिर भी हू बहू जैसे रिपीट होगा। फिर यह ज्ञान भूल जावेगा। प्रायः लोप हो जावेगा। जब तक पुरुषोत्तम संगम युग न आया है तो गीता का ज्ञान हो कैसे सकता। बाकी जो भी शास्त्र आदि हैं वह सभी हैं भक्ति मार्ग के। उन से मेरे साथ कोई भी नहीं मिलता। मनुष्य उलटा पुरुषार्थ करते रहते हैं। जहां भी जाओ माया दवारसे जाकर लगता है। नीचे ही गिरते रहते। भक्ति मनुष्यों को गिराती रहती है। तुम्हारा कल्पवृक्ष का चित्र भी क्लीया है। सतोप्रधान, फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं। तमो0 बनने से काला बन जाते हैं। यह कोई मनुष्य का अक्ल नहीं। कहेंगे भगवान तो निराकार है, उसने कैसे बनाई। समझाया जाता है, दिव्य-दृष्टि से देख बनाया है। दिव्य दृष्टि तो है ना। मीरा, नारद का गायन है। मीरा ने बहुत भक्ति कराई हुआ। बड़ी खुश रहती थी परन्तु क्या हुआ? नीचे तो उतरना ही पड़ा ना। ऊपर जा नहीं सकते। भक्ति मार्ग है ही गिरने का। तमो0 में आना होता है। अभी तुम नालेज सुन रहे हो। बाप समझाते हैं भक्ति की सामग्री कितनी ढेर है। मैं बीज रूप ज्ञान का सागर हूं। तुमको कुछ भी करने नहीं देता हूं। पांव भी नहीं पड़ने देता। पांव किसको पड़ेंगे। शिव बाबा को तो पांव है नहीं। यह तो ब्रह्मा का पांव पड़ना हो जावेगा। मैं तो तुम्हारा गुलाम हूं। उनको कहते ही हैं निराकारी निरअहंकारी। सो भी जब वह स्टूट में आये तब ही तो निरअहंकारी कहा जावे। बाप तुमको कितना अथाह ज्ञान देते हैं। यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान। फिर जो जितना लेवे।

26/8/68

3

अविनाशी ज्ञान रत्न लेकर फिर दान करते जाओ। इन रत्नों के लिये ही कहा जाता है एक [illegible] है। कदम-2 पर पदम देने वाला तो बाप ही है नां। सर्विस पर बडा अटेंशन चाहिये। तुम्हारा कदम है यात्रा का। उनसे तुम अमर बन जावेगे। वहां मरने आदि का फिक्र होता ही नही है। जानते है कि एक शरीर छोड़ कर दूसरा लेंगे। मोह जीत राजा की कथा भी सुनी होगी। यह तो बाप ही बैठ समझाते है। वो कथायें तो सभी पहले की सुनते है। अभी बाप तुमको ही ऐसा बनाते है। अभी की ही सभी बाते है। राखी बन्धन चला आता है, यह कब की निशानी है। यह सब अभी की ही बाते है। कब भगवान ने कहा मनुष्यों को कुछ पता नही। ड्रामा कितने वर्ष का है, नई दुनियां कब, पुरानी दुनियां कब होती है यह भी किसीको पता नही है। इतना तो समझते है कि अभी कलयुग है सतयुग था अभी नही है। पुर्नजन्म को भी मानते है। 84लाख जन्म कह देते है तो जरूर पुर्नजन्म हुआ नां। बाप तो समझाते है 84जन्म लेते हो। मनुष्य तो कुछ भी नही जानते है। परन्तु देखो मनुष्य ही मनुष्यों की महिमा कितनी गाते है। बात ही मत पूछो। गांधी को कितना गाते है। वो अभी है तो इसी पुरानी दुनियां मे ही नां। सीढ़ी तो नीचे ही उतरा है नां। यहां ही होगा। दिन प्रति दिन कला कम होती जावेगी। मनुष्यों को तो यह भी पता नही है। वो तो समझते है कि गांधी जी के कारण हम राम राज्य मे आ गये है। गांधी बापू ने रामराज्य स्थापन किया। उस बेहद के बापू को तो जानते ही नहीं है। वो तो है बेहद का बाप निराकार बापू। वो है साकार। निराकार बापू को सभी याद करते है। वो तो है सभी आत्माओं का बाप। वो ही आकर सभी कुछ समझाते है। देह-धारी बापू तो कुछ है। जानवर भी तो अपने बच्चों के बापू है नां। उनके लिये तो ऐसे नही कहेंगे कि जानवरों का बापू है। सतयुग मे तो कोई भी किचर पटी नही होती है। जैसा मनुष्य वैसा फरनीचर होता है नां। वहां पक्षी आदि भी बहुत फर्स्ट क्लास खूबसूरत होंगे। सभी अच्छी-2 चीजे होगी। वहां फल कितने अच्छे बडे-2 स्वीट होते है। फिर वो सब कहां चले जाते है? स्वीटनेस निकल कर कड़वाहट निकल जाती है। वहां पर तो कड़वी चीज कोई होती नही है। थर्ड क्लास बनते हो तो चीजे भी थर्ड क्लास बन जाती है। सतयुग है फर्स्ट क्लास तो सभी फर्स्ट क्लास ही चीजे भी होती है। कलयुग को कलयुग थर्ड क्लास,। सतोप्रधान फिर सतो रजो . . यहां तो कोई मनाह नही है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। अबतुम बच्चों को ज्ञान है। कहां वो कहां यह रात दिन का फर्क है। बाप तो तुमको कितना ऊंचा बनाते है। जितना याद करेंगे हैल्थ वैल्थ दोनो ही मिल जाती है। दोनो से एक नही होगी तो हैपीनेस नही रहेगी। समझो हैल्थ है तो वैल्थ नही तो क्या काम का। हुजूरे नानी त घुम लर कानी। बच्चे समझते है कि भारत सोने की चिडियां थी। अभी सोना कहां है। शायद आगे चल कर चमड़े के भी सिक्के चलावे। हालत ऐसी ही होती रहती है। सोना, चांदी तो वो गया अभी तो कागज ही कागज है। वो ही पानी मे बह जावे तो पैसा कहां से आवे। सोना तो बहुत भारी होता है वो तो कही पर भी पडा रहता है। आग भी सोने को जला नही सकती है। सोना जाता नही है। वहां का वहां ही रह जाता है। वहां तो यह बाते होती नही। यहां ही इसी समय मे अपार दुःख है। बाप आते ही तब है जब कि अपार दुःख है। कल फिर अपार सुख होगा। तुम तो समझते हो कि बाप कल्प-2 आकर पढ़ाते है। यहां पर कोई भी नई बात थोडी ह है। खुशी मे रहना चाहिये। खुशी हीखुशी। यह अन्त की बातें है। अति ईश्वरीय सुख गोप-गोपियों से ही पूछो। पिछाडी मे तो तुम बहुत ही अच्छी रीती समझ जाते हो। बाप कितना आत्म अभिमानी बनाते है। जबकि तुम शान्ति स्थापन करने आये हो तो फिर अशान्तिः क्यो फैलाते हो। तुम्हारा स्वधर्म ही है शान्ति। बाप आकर रीयल शान्ति बताते हैं। शान्ति का वरसा बाप से ही लेते हो। बाप ही शान्ति का सागर है। उनको ही सभी याद करते हैं। बाप समझाते हैं मेरे पास कौन आ सकते हैं। फलाना2 धर्म फलाने2 समय पर आते हैं। स्वर्ग मे तो आ न सके। अभी तो ब्रह्मा साधु सन्त ही निकल पडे हैं। तो उन्हों की महिमा होती है। जो पवित्र हैं उनकी महिमा जरूर होनी है। पुरानियों की तो इतनी महिमा हो न सके। अच्छा बच्चों को गुडमोर्निंग